19	Face Recognition System With Face Detection: A Report On Digital Security Methods	Er. Archna Jyoti	89-97
20	नवंनीकरण कारणे, परिणाम आणि नियंत्रण	डॉ कळसकर सूर्यकांत नागनाथ	98-103
21	कुसुमाग्रजांची राष्ट्रीय कविता: एक आस्वाद	प्रा. डॉ. विनोद उत्तमराव भालेराव.	104-109
22	राजर्षी.शाहू महाराजांचे शिक्षण क्षेत्रातील योगदान	श्री.अरविंद कैलास पाटील प्रा.डॉ.संभाजी संतोष पाटील	110-116
23	कुमारवयीन मुला – मुलींच्या मानसिक आरोग्य आणि भावनिक बुद्धिमत्ता यांच्या संबंधांचा अभ्यास	श्री. शिंदे ए.सी.	117-122
24	इतिहास लेखनातील ऐतिहासिक साधनांचा चिकित्सक अभ्यास	श्री.पवार बी.व्ही.	123-127
25	अरुण साधू यांच्या 'त्रिशंकू कादंबरीचे आकलन आणि मूल्यमापन'	प्रा.डॉ.राजेंद्र वडमारे	128-131
26	भक्ति आंदोलन और मिरा का व्यक्तित्व - एक अध्ययन	प्रा.विजयानंद गंगावणे	132-137

भक्ति आंदोलन और मिरा का व्यक्तित्व - एक अध्ययन

प्रा.विजयानंद गंगावणे
असोसिएड प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लालबहादूरशास्त्री महाविद्यालय, परतूर

भक्तियुग में दक्षिण के अलवारा भक्तों ने रामानुज, मध्व, विष्णु स्वामी, निम्बार्काचार्य ने उत्तर भारत, मध्य भारत, बंगाल तक भक्ति का प्रचार-प्रसार विक्रम की १५, १६ एवं १७ वीं शताब्दी तक किया। उत्तर भारत में महाप्रभु वल्लभाचार्य अपने शिष्यों द्वारा भक्ति का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। राजपूताना के वीर राजा महाराणा सांगा प्रताप, जयमल, पुत्रां और राव की वीरता की कीर्ति से गूंज रहा था। मीरा इस युग की देन है। उन्होंने युध्द संघर्ष के बीच भक्तिधर्म के गायन का प्रवर्तन किया। कबीर, तुलसी, सूर, दादू, रैदास, विद्यापति, तानसेन, बैजुबावरा इसी युग में मीरा के समकालीन कवि गायक थे। मीरा का जन्म मेडता के कुडकी ग्राम में सं.१५५९-६० को हुआ, ऐसा माना जाता है। वे मेडता शासक, राठौर राव ददा की पौत्री तथा रतनसेन ददा के चतुर्थ पुत्र की पुत्री थी। १० वर्ष की आयु में ही मीरा अनाथ हुई। उनका पालन, शिक्षा-दीक्षा पितामह राव दूदा के यहाँ हुआ। राव दूदा की वैष्णव भक्ति का मीरा पर प्रभाव पडा। कहा जाता है कि सं.१५७३ में राव दूदा के पुत्र बीरतदेव ने मीरा का ब्याह मेवाड के पराक्रमी महाराणा सांगा के जेष्ठ कुँवर भोजराज के साथ कर दिया। सं.१५८० में २० वर्ष की आयु में ही मीरा विधवा हो गई। मीरा को बचपन से ही गिरधारी लाल इष्टदेव के प्रति लगन थी। मीरा ने अपना शेष जीवन इसी देवता को समर्पित किया। वह उनके गुणगाण में भक्तिपद गाने लगी। उन्होंने राजमहल का त्याग किया और वृंदावन में गिरधर नागर के गुणगान में नाच-गाकर जीवन बिताने लगी।

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - I January - March - 2021

ENGLISH / MARATHI / HINDI PART - I

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc.(Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१ ✓	भीष्म साहनी के साहित्य में नारी **प्रा. विजयानंद गंगावणे** **डॉ. अरुण जी. लोखंडे**	१-४
२	'कीचकवध' का हिंदी अनुवाद : द्वंद्वात्मकता और संतुलन **डॉ. सिद्धेश्वर वि. गायकवाड**	५-८

VOLUME - X, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2021
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

१. भीष्म साहनी के साहित्य में नारी

प्रा. विजयानंद गंगावणे
शोधकर्ता, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर जि. जालना
डॉ. अरुण जी. लोखंडे
मार्गदर्शक, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला व वाणिज्य महाविद्यालय, नागसेनवन औरंगाबाद.

आज के युग में संयुक्त परिवार बहुत ही कम मिलते हैं । वेदों के अध्ययन करने पर सर्वत्र सहयोग, सम्मिलित कार्य करने, एकत्रित रहने और तेजस्वी होने के अनेक उदाहरण मिलते हैं । शीघ्रता से कार्य करने तथा सुगमता से सम्पन्न होने से संयुक्त शक्ति का विशेष महत्त्व है । 'तुम्हारा कर्म समान हो, तुम्हारे हृदय और मन भी समान हो, तुम एक मत होकर सब प्रकार से संगठित हो जाओ' । इसके सिर पर परिवार के मुख्य सदस्यों का हाथ होता हैं । हर कार्य करने से पहले से उसे इनकी इजाजत लेनी पड़ती है । कई बार संयुक्त परिवारों में सभी नारियों की देखभाल उचित प्रकार से नहीं हो पाती और वे मन ही मन में प्रताड़ित होती रहती है । 'चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ की माँ, शामनाथ और उसकी पत्नी के लिए समस्या बन गई है । वे उसे घर में भी नहीं रखना चाहते । पत्नी समस्या का हल करती हुई कहती है, फ्इन्हें पिछवाड़े इलकी सहेली के घर भेज दो । रात-भर बेशक वहीं रहे । कली आ जाएँ ।' संयुक्त परिवार में रहने के कारण माँ दानों के लिए समस्या बन गई । 'भाग्य रेखा' कहानी संग्रह में सुनंदा को संयुक्त परिवार में दिखाया गया है । जिस पर स्वयं की स्वतंत्रता की बंदिशें है । वह स्वयं किसी कार्य को करने का निर्णय नहीं ले सकती थी । वर्णन है - भाई की बहू खडी हुई थी, जैसे तीसरे भाई की बहू अपने पति से दुत्कारी हुई, जो रोज शराब पीकर घर लौटता था और किसी पर - स्त्री से पेरम करने लग गया था, खड़ी हुआ करती थी । वह वृक्ष उन सब घटनाओं का साक्षी था । मूक और वृद्ध उसने एक के बाद दूसरी चार युवतियों की चंचलता की आहूति इस संयुक्त परिवार के होम में पड़ते देखी थी और पांचवीं का अभिनय देख रहा था ।

'घर की इज्जत' कहानी में संयुक्त परिवारों में हो रही नारी-दुर्दशा का वर्णन और फिर उसी से प्रेरणा लेकर जागरूक भी होती हैं । वह सुनन्दा के रूप में स्वयं निर्णय भी लेने लगती है । 'लीला नंदलाला की' कहानी में जब स्कूटर गुम हो जाता है तो संयुक्त परिवार की महिलाओं के कथन अलग-अलग होते हैं और जब स्कूटर प्राप्त होता है तो उनकी प्रतिक्रिया अलग-अलग थी । 'माँ ने कहा, 'भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं । मैंने पहले ही कहा था कि मेरे बेटे का स्कूटर मिल जायेगा ।' पत्नी भी चहक उठी । उसने मेरी ओर यों देखा जैसे उसकी नजर में फिर मेरी कीमत कुछ-कुछ बहाल नारी संयुक्त परिवार में रहती हुई आपस में प्यार-पेरम रखने की सलाह देती है । व्यावहारिकता का उसे पूरा ज्ञान है । समाज मे रहते हुए व्यावहारिक ज्ञान अवश्य होना चाहिए । पंक्तियाँ है,'चैके के ऐन बीच में वीरजी और मनोरमा, भाई-बहन, एक साथ, एक ही थीली में खाना खा रहे थे । माँ जी चुल्हे के सामने बैठी परांठे सेंक रही थी । माँ बेटे को समझा रही थी, यही मौके खुशी के होते हैं, बेटा! कोई पैसे का भुखा नहीं होता! बेटा! कोई पैसा भुखा नहीं होता। अकेले तुम्हारे पिता जी सगाई डलवाने जाएंगे तो समधी भी इसे अपना अपमान समझेगे ।' 'आवाजे' कहानी में वर्णन है कि संयुक्त परिवार मेंरहते हुए अक्सर नारियों का

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - IV OCTOBER - DECEMBER - 2020

MARATHI / HINDI PART - I

Peer Reviewed Refereed and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	जनजातियों की परंपरागत चिकित्सा पद्धतियों का विश्लेषण (विशेष संदर्भ : राजस्थान जनजातियाँ) **Dr. Pinky Sharma**	६३-६८
१४	कोविड-१९ में महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **डॉ. प्रमोदकुमार केशव नंदेश्वर**	६९-७४
१५	शिक्षा पर कोविड-१९ का प्रभाव **डॉ. विनय कुमार सिंह**	७५-७९
१६	भारतीय समाजदर्शन एवं संस्कृति को बुद्ध की देन । **सहायक प्रो. बनसोडे जी.एस.**	८०-८४
१७	डॉ. अम्बेडकर युग की हिन्दी पत्रकारिता एवं चुनौतियॉ **किरण मधुकर अवसरमोल**	८५-८७
१८	घरेलू - हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा **डॉ. श्रीमती अंजु ए. शरण**	८८-९२
१९	हिंदी साहित्य में नारी-विमर्श और साहित्य **डॉ. सय्यद इक़बाल मजाज़** **डॉ. असलम गुलाम हुसैन नदाफ**	९३-९५
२०	संगीत में संवाद का महत्व **डॉ. पूर्ण चंद**	९६-१००
२१	भीष्म साहनी का हिन्दी साहित्य में कार्य **प्रा. विजयानंद गंगावणे** **डॉ. अरूणा जी. लोखंडे**	१०१-१०४
२२	भारतीय वास्तुशास्त्रानुसार भवन में चित्राङ्कन पद्धति **डॉ. रीता गुप्ता**	१०५-१०७

VOLUME - IX, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

२१. भीष्म साहनी का हिन्दी साहित्य में कार्य

प्रा. विजयानंद गंगावणे
शोधकर्ता, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय परतूर, ता. परतूर, जि. जालना.
डॉ. अरूणा जी. लोखंडे
मार्गदर्शक, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर कला व वाणिज्य महाविद्यालय, नागसेनवन औरंगाबाद.

भूमिका

भीष्म साहनी प्रसिद्ध भारतीय लेखक थे। उन्हें हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। भीष्म साहनी मानवीय मूल्यों के सदैव हिमायती रहे। वामपंथी विचारधारा से जुड़े होने के साथ-साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी आंखों से ओझल नहीं करते थे। आपाधापी और उठापटक के युग में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। उन्हें उनके लेखन के लिए तो स्मरण किया ही जाता है, लेकिन अपनी सहृदयता के लिए भी वे चिरस्मरणीय हैं। भीष्म साहनी ने कई प्रसिद्ध रचनाएँ की थीं, जिनमें से उनके उपन्यास 'तमस' पर वर्ष 1986 में एक फ़िल्म का निर्माण भी किया गया था। उन्हें कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए थे। 1998 में भारत सरकार के 'पद्म भूषण' अलंकरण से भी वे विभूषित किये गए थे।

जन्म, शिक्षा तथा परिवार

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त, सन् 1915 में अविभाजित भारत के रावलपिण्डी[1] में हुआ था। उनके पिता का नाम हरबंस लाल साहनी तथा माता लक्ष्मी देवी थीं। उनके पिता अपने समय के प्रसिद्ध समाजसेवी थे। हिन्दी फ़िल्मों के ख्यातिप्राप्त अभिनेता बलराज साहनी, भीष्म साहनी के बड़े भाई थे। पिता के समाजसेवी व्यक्तित्व का इन पर काफ़ी प्रभाव था।[2] भीष्म साहनी का विवाह शीला जी के साथ हुआ था।

भीष्म साहनी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हिन्दी व संस्कृत में हुई। उन्होंने स्कूल में उर्दू व अंग्रेज़ी की शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1937 में 'गवर्नमेंट कॉलेज', लाहौर से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. किया और फिर 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान समय में प्रगतिशील कथाकारों में साहनी जी का प्रमुख स्थान है।

कार्य

देश के विभाजन से पहले भीष्म साहनी ने व्यापार भी किया और इसके साथ ही वे अध्यापन का भी काम करते रहे। तदनन्तर उन्होंने पत्रकारिता एवं 'इप्टा' नामक मण्डली में अभिनय का कार्य किया। साहनी जी फ़िल्म जगत् में भाग्य आजमाने के लिए बम्बई आ गये, जहाँ काम न मिलने के कारण उनको बेकारी का जीवन व्यतीत करना पड़ा। उन्होंने वापस आकर पुन: अम्बाला के एक कॉलेज में अध्यापन[3] के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थायी रूप से कार्य किया। इस बीच उन्होंने लगभग 1957 से 1963 तक विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को में अनुवादक के रूप में बिताये। यहाँ भीष्म साहनी ने दो दर्जन के क़रीब रशियन भाषायी किताबों, टालस्टॉय, ऑस्ट्रोव्स्की, औतमाटोव की किताबों का हिन्दी में रूपांतर किया। उन्होंने 1965 से 1967 तक "नई कहानियाँ" का सम्पादन किया। साथ ही वे प्रगतिशील लेखक संघ तथा अफ़्रो एशियाई लेखक संघ से सम्बद्ध रहे। वे 1993 से 1997 तक 'साहित्य अकादमी एक्जिक्यूटिव कमेटी' के सदस्य भी रहे।

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - X Issue - I January - March - 2021

ENGLISH / MARATHI / HINDI PART - I

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भीष्म साहनी के साहित्य में नारी **प्रा. विजयानंद गंगावणे** **डॉ. अरुण जी. लोखंडे**	१-४
२	'कीचकवध' का हिंदी अनुवाद : द्वंद्वात्मकता और संतुलन **डॉ. सिद्धेश्वर वि. गायकवाड**	५-८

Power of Knowledge Peer Review Journal, January Special Issue-V 2022 ISSN 2320-4494 Impact factor 3.7286

RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Prof. Dr. Sadashiv H. Sarkate

● Mailing Address ●
Prof. Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
1	A Problem of Child Labour in Solapur City	Shri. D. M. Shinde.	1-4
2	Research Paper / Article Writing	Dr. Sanjay Bhedekar	5-8
3	Evidence-Based Assessment Tools For Common Mental Health Problems: A Practical Guide For School Settings	Dr.Patwardhan Rathod	9-13
4	An Overview: Application on Web- based Services in Academic Libraries	Sarika Bhagwanrao Rengunthwar	14-17
5	Information Seeking Behavior in Research -A Study of Faculties in Savitribai college of Art's, Ahmednagar District, Maharashtra	Prof. Shahaji M. Takawane	16-23
6	Benefits and Challenges of Practicing Teakwondo to Adolescents	Dr. Shirke Ravindra Dattatraya	24-28
7	Silhouette of Muslim Minority Girls Pursuing College Education : A Case Study of Al-Ameen College, Belgaum	Mohamad Mustafa Mujawar Dr.Shivalingappa B.P.	29-39
8	१९०० ते २००० या कालखंडातील स्त्रियांचे वैचारिक लेखन	सौ.ज्योत्स्ना एकबोटे	40-48
9	ग्रामीण कथा : १९८० नंतरच्या ग्रामीण कथालेखिका	श्री.भारत रामजी बांडे डॉ.राहुल राजाराम हांडे	49-54
10	कादंबरी निर्मिती प्रक्रिया : एक आकलन	प्रा.डॉ. गोपीनाथ पांडूरंग बोडखे	55-58
11	कागूद - शेतीनिष्ठ मराठी संस्कृतिचा कणा	प्रा. कृष्णा रतनराव बनसोडे	59-65
12	महाराजा सयाजीराव गायकवाड आणि त्यांचे साहित्य प्रेम	भक्ती प्रसाद गावस	66-74
13	महिला सबलीकरण आणि मराठी साहित्य	डॉ.विकास बहुले	75-80
14	महाराष्ट्रातील लोकसाहित्याच्या अभ्यासाचे स्वरूप	प्रा. डॉ. शत्रुघ्न फड	81-87
15	शरच्चंद्र मुक्तिबोधांच्या कवितेतील मानुषता	प्रा.प्रमोद नारायणे	88-93
16	मध्ययुगीन काळातील स्त्रीजीवन : एक दृष्टीक्षेप	डॉ.राजेंद्र सुकदेव चौधरी	94-97
17	माझी मऱ्हाटीचि बोलु कौतुके	डॉ.धनपाल कांबळे	98-101
18	महाविद्यालय छात्रो के लिए रोजगार के क्षेत्र	प्रा.डॉ.वैशाली शालिग्राम कंकाळे	102-108
19	स्वतंत्रता आंदोलन में विनोबा का योगदान	डॉ.सालीम बनादार	109-115
20	उपनिवेशवाद के आईने में 'मय्यादास की माडी'	प्रा.विजयानंद गंगावणे	116-117

उपनिवेशवाद के आईने में 'मय्यादास की माडी'

प्रा.विजयानंद गंगावणे
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
लालबहादूरशास्त्री महाविद्यालय, परतूर

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य अपने वर्ण्य विषय की दृष्टि से काफी विकसित हो चुका है । उत्तर आधुनिक परिदृश्य में हिंदी कथा साहित्य ने एक तरह से क्रांतिकारी विचार प्रवाह की निष्पत्ति की है । उत्तर आधुनिकतावाद, दलित विमर्श आदि बहुचर्चित विषय के साथ-साथ उपनिवेशवाद और नवनिवेशवाद भी साहित्यकारों के लिए चर्चा के विषय बने रहे । सबसे पहले हमें देखना है कि यह उपनिवेशवाद और उपनिवेशवाद से तात्पर्य क्या है ? किसी एक भौगोलिक क्षेत्र के लोगों के द्वारा किसी दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में उपनिवेश है । इतिहास में प्राय: १५ वीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक उपनिवेशवाद का काल रहा । इस काल में युरोप के लोगों ने विश्व के विभिन्न भागों में उपनिवेश बनाए । हमारा देश उनमे एक था । इसी उपनिवेशवाद का एक उत्पाद है नव उपनिवेशवाद ।

औपनिवेशिक काल में भारत के इतिहास और संस्कृती के बारे में कल्पनाएँ की गयी । इस तरह के निर्माण मुख्य रूप से यूरोपीय स्त्रोतों पर आधारित टिप्पणियों पवर निर्भर है । नयी उपिनवेशवादी जांच ऐसे पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रहों को उलट रहे है और जांच के नए क्षेत्रों को खोल रही है । यही पर भीष्म साहनी के उपन्यास मय्यादास की माडी की साार्थकता है ।

'मय्यादास की माडी' स्वतंत्रता के सौ बरस पूर्व पंजाब के एक युग का इतिहास हमारे सामने प्रस्तुत करता है । समाज में समय के अनुरूप परिवर्तन होता रहता है । ऐसे परिवर्तन के कई कारण भी होते हैं । जैसे मानवीय मूल्य एवं आदर्शों का बदलाव, बाहर

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

Impact Factor : 3.8699, ISSN -2348-2702, Vol.-X , Issue - I, January-February-March 2022

Multilingual Peer Reviewed

APOORV KNOWLEDGE

International Journal of Multidisciplinary Research

January-February-March 2022 Vol. - X Issue - I

• EDITOR-IN-CHIEF •

Dr. Vandana Namdeo Bankar

Head, Dept. of Home Science,
Dhareshwar Shikshan Sanstha's,
Arts and Science College, Chincholi (Li.)
Tq. Kannad, Dist. Aurangabad, (M.S.) India.
BOS Member in Home science
Dr.Babasaheb Ambedkar Marathwada University,
Aurangabad

• PUBLISHED BY •

Bharat Sarjerao Jamdhade
Aurangabad

INDEX

Sr. No.	Topic	Author	Page No.
1	Impact of Mid-Day Meal on Cognitive Development: A Comparative Study Between Scheduled Caste and Non-Scheduled Caste Students of Rural Area	Sanjay Bharatiya Dr. Bihari Singh	7
2	Role of Women in Agriculture Sector	Sapna Yadav Bimla Lagyan	12
3	Zero Tolerance Towards Harassment Of Women At Workplace	Jyotsna Gulati	16
4	Dr. Babasaheb Ambedkar, Muslim And Caste System	Dr. Shailesh Raut	20
5	Dietary pattern and nutritional status of Indian rural women	Dr. Sikandra Devi	23
6	A Study of Indian Stock Market	Vrishali Kakasaheb Madne Dr. H.G. Vidhate	27
७	अनुवाद की समस्याएँ तथा विशेषताएँ	प्रा. विजयानंद गंगावणे	३२
८	रोजगार हमी योजनेचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	प्रा.डॉ. मधुकर आत्माराम देसले	३६
९	लोकसंख्यावाढ आणि पर्यावरण	प्रा.डॉ. सुनिल व्ही. कुवर	४०
१०	डॉ. आंबेडकरांचा स्त्रीवादी दृष्टीकोन: दलित स्त्रिया आणि शिक्षण	विद्या चौरपगार	४३

Impact Factor : 3.8699, ISSN -2348-2702, Vol.-X , Issue - I, January-February-March 2022

अनुवाद की समस्याएँ तथा विशेषताएँ

प्रा. विजयानंद गंगावणे

• असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, लालबहादूरशास्त्री महाविद्यालय, परतूर

हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएँ है, उनका स्वरूप अलग-अलग है। साहित्यिक इन विधाओं का उपयोग करके अपना मत और भावना अपने लेखन के द्वारा व्यक्त करता है। कहानी, उपन्यास, कविता, डायरी, रिपोर्ताज, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र इन विधाओं की तरह अनुवादीत साहित्य ने भी हिन्दी में अब एक विधा का स्थान प्राप्त किया है। अन्य भाषाओं के कृति का अनुवाद हिन्दी में करके अनेक साहित्यिकारोंने हिन्दी साहित्य को संपन्न करने का कार्य किया है। आज के युग में अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है, अनुवाद को इतने व्यापक क्षेत्र में कार्य करना पड रहा है, जिसकी कोई सिमा नहीं है। वह शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान तथा देश-विदेश के हर क्षेत्र में काम कर रहा है। आज कल संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्य हो रहा है। दुरदर्शन और समाचार पत्र इन में प्रमुख है। रायटर जैसी आंतरराष्ट्रीय न्युज एजेंसियाँ अन्य देशों की भाषा में छपे और प्रसारित समाचारों का अलग-अलग भाषओं में अनुदित करके पाठकों तक पहुँचाते है। आकाशवाणी से कई भाषाओं में रोजाना खबरें प्रसारित होती है। इनकी तैयारी अनुवादकों द्वारा की जाती है। इसके साथ हि साथ आंतरराष्ट्रीय संबंध अनुवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। अतः दिन-ब-दिन बढते क्षेत्र के कारण अनुवाद का महत्त्व भी बढता ही जा रहा है। अनुवाद विधा ने सभी भाषाओं की साहित्य संपदा के संवर्धन में अपना योगदान दिया है। सांस्कृतिक समन्वय में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। भारत के संदर्भ में विचार करे तो भाषा की प्रादेशिक सिमाओं में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। भाषा की प्रादेशिक सिमाओं में साहित्य सिमित हो जाने के फलस्वरूप अन्य भाषा-भाषी साहित्यप्रेमी उसके रसास्वादन से वंचित रह जाते है। प्रादेशिक भाषा साहित्य को व्यापक साहित्य मंच पर प्रतिष्ठीत करने का कार्य अनुवाद विधा ने संपन्न किया है।

अनुवाद संकल्पना का अर्थ :

अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति 'वद्' धातु से है। 'वद्' धातु में 'धज्' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है और फिर उसके साथ अनु उपसर्ग जुडने पर अनुवाद शब्द बनता है। वद् से तात्पर्य है बोलना तथा अनु का अर्थहै, पिछे साथ-साथ, इधर-उधर, सदृश्य, पास आदि। अतः इसका व्युत्पत्तिक अर्थ होगा- पुनःकथन एक बार काही हुई बात को दुबारा कहना। इसमें अर्थ की पुनरावर्ती होती है, शब्द-रूप की नहीं। हिन्दी में अनुवाद शब्द अंग्रेणी 'ट्रान्सलेशन' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। 'ट्रान्स' तथा 'लेशन' शब्दों के योग से बना है। 'ट्रान्स' का अर्थ है ले जाने की क्रिया। अतः 'ट्रान्सलेशन' का व्युत्पत्तिक अर्थ हुआ परिवहन, एक स्थान बिन्दु से दुसरे स्थान बिन्दु पर ले जाना। स्पष्ट है की 'अनुवाद तथा

ijindex

ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)
Vol. I No. 24

Excel's International Journal Of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

April - 2022

Economical and Social Vital Issues

Issue Editor

Dr.Meena Fakira Patil

Dept. of Economics

M.P.H. Mahila mahavidyalay,

Malegaon Camp,Dist.Nashik.

Co-Editor

Dr. Nandkumar N. Kumbharikar

Dept. of Public Administration

SPP College, Sirsala, Dist. Beed.

Emaill - dr.kumbharikarnn@gmail.com

Excel Publication House

Aurangabad

Index

Sr. No.	Name	Title Name	Page No.
1	डॉ.मीना फकिरा पाटील	महात्मा गांधी यांची आर्थिक विचारसरणी : एक अभ्यास	3
2	प्रा.डॉ.सोनवणे दिगंबर जनार्दन	स्वातंत्र्य लढयातील साने गुरूजींचे योगदान : एक अभ्यास	8
3	प्रा.साळवे एस.आर.	ब्रिटीशकालीन शेतकरी आंदोलन : एक ऐतिहासिक दृष्टीक्षेप	12
4	डॉ. दत्ताहरी होनराव	सत्ता : संवैधानिक तरतुदी आणि असंवैधानिक वर्तन	15
5	डॉ.चंद्रशेखर काशिनाथ तळेकर प्रियंका जालिंदर चव्हाण	आदिवासी विकास :जंगल अधिकार आणि विकासाच्या नव्या वाटा	19
6	प्रलोभ माधवराव कुलकर्णी नांदेडकर ईश्वर दत्तात्रय	प्राणायाम आणि योगिक क्रियाचा मानवी आरोग्यावर होणारा परिणाम - एक अभ्यास	23
7	प्रा.डॉ. हरी नारायण जमाले नारायण यमाजी तुवर	आदिवासी सुधारणा-महिला दिशादर्शक	27
8	डॉ.सोनवणे जी.एन.	रशिया आणि युक्रेन युद्धाचे भारतावरील परिणाम	31
9	कांचन मुळे	आंबेडकरोत्तरकालीन दलित साहित्याची वैशिष्ट्ये	35
10	डॉ.नंदकुमार ना. कुंभारीकर	पेशवेकालीन स्वराज्याची प्रशासकीय व्यवस्था	39
11	डॉ. पठाण ए.एम.	नवम् दशक के उपन्यासों के कथावस्तु का अध्ययन	42
12	प्रा.डॉ. अविनाश कासांडे अर्चना रमेषचंद्र बंग	सुधा अरोडा के कहानी साहित्य की भाषा संरचना, शिल्प एवं शैली	48
13	प्रा. विजयानंद गंगावणे	साठोत्तरी हिंदी स्त्रीवादी साहित्य में विद्रोह का स्वर	54
14	Dr. Kalyan S. Ghodke	The Role of NGOs in Disaster Management	58
15	Dr. AnantVithalraoJadhav	Sri Aurobindo'*sperseus The Deliverer* : A Patriotic Play	61
16	Dr.Sk.Md. Ataullah M.K Dr.Kale Ravindra	An Overview on the Role of Sport Psychology in Sports Performance Enhancement	66
17	Dr.Dilip Sahebrao Jare	An overview on Concept and Nature of Biochemistry	70
18	Dr.Thorwe.R.H.	Library Management: Impact Of Covid-19 Pandemic	73

साठोत्तरी हिंदी स्त्रीवादी साहित्य में विद्रोह का स्वर

प्रा. विजयानंद गंगावणे
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
लालबहादूरशास्त्री महाविद्यालय, परतूर

नारीवाद को अंग्रेजी में 'फेमिनिज़म' कहा जाता है। 'नारीवाद', एक ऐसा विचार है जो पुरूष व स्त्री के मध्य असमानता को स्वीकार कर नारी के सबलीकरण की प्रक्रिया को बौद्धिक व क्रियात्मक रूपसे प्रस्तुत करता है। 'नारीवाद' एक विचार धारा भी है और एक आंदोलन भी है। नारीवाद के सिद्धांत के अंतर्गत अनेक प्रकार के संबोधन व सिद्धांतों का निरुपण हुआ है। 'नारीवाद' मूल रुप से समानता व सबलीकरण के माध्यम से महिलाओं और पुरूषों के मध्य व्याप्त समाजगत असमानता को नकारता है। नारीवाद के अनेक प्रकार है, जिस में अलग-अलग विचारकों ने विभिन्न आयामों का महत्व दिया है। इस संदर्भ में रामजेनोग्ल ने नारीवाद पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि- नारीवाद पर परिभाषा का स्थिर रुप कहीं भी देखने को नहीं मिलता क्योंकि स्त्री की आज़ादी का अर्थ हजारों वर्ष से विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता रहा है। आगे उन्होंने और भी स्पष्ट करते हुए बताया कि'नारीवाद' को परिभाषित करना उस पर राजनीतक दृष्टि से प्रश्नचिन्ह लगाना है। उसकी परिभाषा देने वाले की सोच पर यह निर्भर करता है कि वह भूत, वर्तमान तथा भविष्य में स्त्री-पुरुष के बीच संबंधों को किस आधार पर ग्रहण करता है। इसलिए नारीवाद विभिन्न सामाजिक सिद्धांतों का एक ऐसा निर्मित रुप है समाज में स्थित दोनों लोगों के बीच के संबधों को बताया है तथा उनके अनुभवों की वाणी विभिन्नता को भी रखता है। महिला स्वतंत्रतावादी आंदोलन के विकास के साथ ही उनमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक चेतना बढी है और महिला-विमुक्ति आंदोलन के समर्थकों ने महिलाओं पर होनेवाले अत्याचारों का विरोध करना शुरु कर दिया है। क्रिया के स्तर पर इस आंदोलन को व्यापक सफलता मिली है। ये मुद्दे उन महिलाओं ने उठाए हैं जिनकी बौद्धिक पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर की माना जाती सकती है।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में नारी मुक्ति आंदोलन खुद को एक नये मोड पर खडा पा रहा है। बाजारवाद और खुली अर्थ व्यवस्था ने स्त्री-पुरुष संबंधों के समीकरण को प्रभावित करना शुरु कर दिया है। इसके ठोस प्रमाण अब खुलकर सामने आने लगे हैं। समकालीन महिलाएँ समाज में अपनी स्थिति, अधिकारों और समस्याओं को लेकर मुखरित हुई हैं। नारीवादी चिंतन ने किसी भी तरह की संस्कृतिक इजारेदारी के विरोध का झंडा बुलंद किया है। वह अपनी और पितृसत्ता की संरचनात्मक भिन्नता और बहुलतावादी पहचान को मान्यता देती है। यह वाद दमनकारी संरचना को हटाकर उसकी जगह स्वयं दमनकारी बनकरमहा बैठना चाहता है। विषमता, विभिन्नता, विच्छिन्नता औस अस्मिता की लालसा में बडे-बडे सांस्कृतिक संकट पैदा हो रहे है। व्यापक संकट को पितृसत्ता के विशिष्ट संकट में रुपांतरित करने की क्षमता नारीवाद में है क्यों की वह समाज की सभी श्रेणियों में अपने लिए स्वाभाविक गुंजाइश खोज सकता है। वह उत्तर-आधुनिक समाज का सर्वाधिक व्यापके और आमूलवादीआंदोलन है। विशेष तौर से भारत जैसे बहु सांस्कृतिक देश के संदर्भ में नारीवाद की इस वर्चस्व-विरोधी और बहुलतावादी प्रवृत्ति का महत्व और भी स्पष्ट हो जाता है। समकालीन उपन्यासों में चित्रित महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में भाग लेती है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि क्षेत्रों में अपना योगदान देती है। समकालीन विभिन्न संदभी में स्वतंत्रता चाहनेवाली आधुनिक नारी में स्वतंत्र चेतना, मानव एवं स्वाधीन व्यक्तित्व की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

RNI No MAHAUL03008/13/1/2012-TC

ISSN 2320-4494

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Volume I, Issue I
April to June 2022
Editorial Officer
Kranti Publication
Georai Dist.Beed
Beed -431 127
Contact : 7875827115
E-mail : Sarkatelata@gmail.com

Published By :
Mrs. Lata Sadashiv Sarkate

Price : Rs. 300/-

Advisory :-

Hon. Dr. Sudhir Gavhane
Vice Chancellor M.G.M.U. Aurangabad & Ex.Vice Chancellor Y.C.M.U. Nasik & Professor of Mass Communication & Jornalism Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr.Pratibha Aher
Management Council Member
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Madan Shivaji
Ex-Management Council Member
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Bhagwat Katare
Ex. Director, BCUD
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Hon. Dr. Sanjay Nawale
Head of Dept. Hindi
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Hon. Dr. Paralikar Kanchan
Principal, Mahila College, Georai

Hon. Dr. Ashok Mohekar
Ex-Magement Council Member
Dean, Faculty of Science
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

EDITOR

Prof. Dr.Sadashiv Haribhau Sarkate
Senate Member, Ex-Chairman-BOS in Marathi, Dr.B.A.M.U.Aurangabad
Associate Professor & Head, Dept. of Marathi, JBSPM's
Arts & Science College, Shivajinagar, Gadhi Tq. Georai Dist. Beed

EDITOR BOARD

Dr. Mala Nurilmala
Dept.of Aquatic Product Technology
Faculty of Fisheries and Marine Sciences
Bogor Agricultural University, Indonsia

Dr. Bharat Handibag
Ex-Dean, Faculty of Arts
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr. Dhere R.M.
Dept.of Zoology
Swa.Sawarkar Mahavidayala, Beed

Dr. Vasant Biradar
Princial, Mahatma Phule
Mahavidyalaya,Ahmedpur,Dist.Latur

Dr.Sudhakar Shendge
Professor of Hindi
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Dr.D.P.Takale
Professor & Head
Dept. of Economics
L.B.S.College, Partur Dist.Jalna

Dr.Ganesh Adgaonkar
Kalika Devi College
Shirur Kasar Dist.Beed

Dr.Aparna Ashtaputre
Dept. of Psychology,
Dr.B.A.M.U.Aurangbad

Dr. Vitthal S. Jadhav
Dept. of Pub.Administration,
Kalikadevi College, Shirur (K.) Dist.Beed

Dr. Kadam Mangal S.
PG. Dept.of Zoology
Yeshwant Mahavidayala, Nanded

Dr. Rajesh Karpe
Management Council Member
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr. Taher H. Pathan
Aligad Muslim university, Aligad (U.P.)

Dr.S.D.Talekar
Professor, Dept. of Commerce
L.B.S.College, Partur Dist.Jalna

Dr.S.R.Takale
Principal, Sant Sawatamali, College,
Phulambri Dist. Aurangabad

Dr.Bharat Khandare
Principal, Swami Vivekanand College, Mantha
Dist. Jalna

Dr.Vishwas Kadam
Principal, JBSPM's Arts & Science College,
Gadhi Tq.Georai, Dist. Beed

Dr.Fulchand Salampure
Management Council Member
Dr.B.A.M.U.Aurangabad

Dr.Madhukar Jadhav
Shri Vyankatesh mahavidyalya,
Deulgaonraja, Buldana

PEER REVIEW / REFERECS

Dr.Shahaji Gaikwad
Ex-Chairman BOS in English
Dr.B.A.M.U. Aurangabad

Dr.Vishwas Patil
Radha Nagari College,Radha Nagari Dist. Kolhapur

Dr. Dilip Khairnar
Professor, Sociology
Deogiri College, Aurangabad

Dr. Santos Chavan
Shivchhatrapati College, Pachod Dist. Aurangbad

Dr. Shivaji Yadhav
Shivchhatrapati College, Pachod Dist. Aurangbad

Dr. Laxmikant Shinde
Assit.Professor
JES College, Jalna

MANGING EDITORS

Mr. Ramesh Ringne
Prof. Bapu Ghokshe
Mr. Shivaji Kakade
Dr. Shakur Shaikh Husain

Mr. Vinod Kirdak
Dr. Datta Tangalwad
Mr. Kalandar Pathan
Dr. Suhas Morale
Dr. Baliram Katare

Assit.Prof.Mohan Kalkute
Dr. Adgaonkar Ganesh
Dr. Santosh Chavan
Dr. Rajkumar Yallawad

18	भारतीय लोकशाही आणि आघाडी सरकार	डॉ.वसंत बाबासाहेब खरात	88-93
19	मोबाईल व्यवसनाचा किशोरवयीन मुलांच्या शारीरिक आणि मानसिक आरोग्यावर होणारा परिणाम	डॉ.अनंता चोटकर	94-98
20	औरंगाबाद जिल्ह्यातील कृषी भूमी उपयोजनातील आधुनिक सर्वेक्षण पध्दतीचा वापर	डॉ.बळीराम लहाने	99-105
21	सिंधु संस्कृती आणि त्यांची स्थापत्य कला	डॉ. रमाकांत शिवाजीराव शातलवार	106-109
22	हिन्दी दलित आत्मकथाओं मे विद्रोही स्वर	प्रा.विजयानंद गंगावणे	110-120

हिन्दी दलित आत्मकथाओं मे विद्रोही स्वर

प्रा.विजयानंद गंगावणे
लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर
जि.जालना

बीज शब्द :- दलित आत्मकथाएँ, विद्रोह, ब्राह्मणवाद, धार्मिक पाखंड, विद्र जातिवाद-वर्णवाद

प्रस्तावना :

'विद्रोह' एक विरोध है, यह विरोध किसी भी चीज का, किसी भी चीज से हो सकता है। विरोध किसी के प्रति धावा बोलना अथवा हल्ला बोलना है, कोई ठोस उपाय और स्थिर सामाधान नहीं है। ऐसे में विरोध चलता रहता है। क्योंकि यह निश्चित सामाधान के साथ नहीं होता है, बस एक हलचल पैदा करके नदारद हो जाता है। विद्रोह अक्सर योजना बद्ध नहीं होते है. ये किसी समस्या का समाधान नहीं दे पाते है और ना ही कोई निश्चित दिशा नहीं होती है. इसीलिए विद्रोह पुनर्घटित होते रहते हैं। इसके विपरीत 'क्रांति' विरोध, विप्लव और विद्रोह से ही पैदा होता है। पर 'क्रांति' उस विरोध, विप्लव और विद्रोह को कह सकते हैं। जिसमें योजना हो, दिशा हो और समाधान हो। यह परिभाषा महज विद्रोह से अंतर के सन्दर्भ में है। वास्तव में क्रांति तो वहद होता है. इसे सामाजिकचक्र के परिप्रेक्ष्य में ही परिभाषित करना संतोष जनक और वास्तविक होता है। सामाजिक-चक्र की एक दिशा होती है। अपूर्णता से पूर्णता की ओर समाज की गति ही समाज की दिशा है। समाज का अपूर्णता से पूर्णता की ओर जाने को ही हम स्वाभाविक परिवर्तन कहते हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डालें तो भक्तिकालीन युग का मूल स्वर 'जातिवाद' और धार्मिक आडम्बरों के विरोध पर आधारित था। बौद्ध । परम्परा के अनुयायीयों ने धार्मिक पाखण्ड, ब्राह्मणवाद, जाति प्रथा आदि के विरोध में स्वरबुलन्द किया, जिसकी प्रतिध्वनि नाथ समुदाय के कवियों की रचनाओं में मिलती है। भक्ति आन्दोलन में पहली बार

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

● Mailing Address ●
Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
1	Role of Communication in Personality Development	Munjaji Kishanrao Rakhonde	1-5
2	Use Of Linear Algebra In Cryptography	Mayur Satish Patil	6-10
3	Effective Study of the Great Depression on the Indian Economy	Dr. Valmik Dagadu Parhar	11-15
4	Autonomy of students Teachers and educational Institution	Asst. Prof.Dr. Meenal Vanvat	16-22
5	Screening of Aerobic Cellulolytic Bacteria from the gut of Termite for Cellulase Production	Surekha Digambar Bharambe	23-29
6	A Critical Analysis Of Medical Waste Management, Its Impact On Human Being And Environment.	Prof.Ratnakar Sudamrao Bansod	30-35
7	"A Critical Analysis Of Uncitral (United Nation Commission On International Trade Law) Model Law On Cross Border Insolvency (Insolvency & Bankruptcy Code 2016) And Its Enforciability In India"	Adv. Renuka Manikrao Talokar	36-42
8	नवासा भिलनिचा एल्गार कथासंग्रहाची भाषाशैली	प्रा. डॉ. विजय पाटील	43-45
9	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही	प्रा.संदीप कोरडे	46-50
10	भारतातील ऑनलाइन शॉपिंगची गरज आणि भविष्य	डॉ. संतोष धामने	51-56
11	प्रवासवर्णनातून व्यक्त होणारी स्त्रियांची मानसिकता	मनिषा दादाभाऊ औटी	57-66
12	रुपेरी पडद्यावरील मराठी कादंबरी	डॉ.राजेंद्र थोरात	67-79
13	महाराष्ट्रातील भटके - विमुक्त आणि त्यांचे साहित्य लेखन	प्रा.डॉ.सोपान माणिकराव सुरवसे	80-84
14	संत तुकाराम गाथेच्या समीक्षेचे विविध दृष्टिकोन	सदानंद आग्रे	85-88
15	व्यक्तिचित्रण' या साहित्यप्रकाराचे स्वरुप	प्रा.बाजीराव कृष्णाजी पाटील	89-94
16	स्त्री - पुरुष समानतेच्या मूल्याबाबत सद्यस्थितीचा अभ्यास	डॉ.एकनाथ द. वाजगे	95-100
17	नारी के विविध रुप - लेखिका मंजूल भगत की दृष्टी से	प्रा.डॉ.शोभा यशवंते	101-105
18	मराठी कीर्तन व कीर्तनाचे प्रकार	डॉ.विनोद गायकवाड गिरीश जोशी	106-109
19	हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श	प्रा.विजयानंद गंगावणे	110-113

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्र.
1	Role of Communication in Personality Development	Munjaji Kishanrao Rakhonde	1-5
2	Use Of Linear Algebra In Cryptography	Mayur Satish Patil	6-10
3	Effective Study of the Great Depression on the Indian Economy	Dr. Valmik Dagadu Parhar	11-15
4	Autonomy of students Teachers and educational Institution	Asst. Prof.Dr. Meenal Vanvat	16-22
5	Screening of Aerobic Cellulolytic Bacteria from the gut of Termite for Cellulase Production	Surekha Digambar Bharambe	23-29
6	A Critical Analysis Of Medical Waste Management, Its Impact On Human Being And Environment.	Prof.Ratnakar Sudamrao Bansod	30-35
7	"A Critical Analysis Of Uncitral (United Nation Commission On International Trade Law) Model Law On Cross Border Insolvency (Insolvency & Bankruptcy Code 2016) And Its Enforciability In India"	Adv. Renuka Manikrao Talokar	36-42
8	नवासा भिलनिचा एल्गार कथासंग्रहाची भाषाशैली	प्रा. डॉ. विजय पाटील	43-45
9	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही	प्रा.संदीप कोरडे	46-50
10	भारतातील ऑनलाइन शॉपिंगची गरज आणि भविष्य	डॉ. संतोष धामने	51-56
11	प्रवासवर्णनातून व्यक्त होणारी स्त्रियांची मानसिकता	मनिषा दादाभाऊ औटी	57-66
12	रुपेरी पडद्यावरील मराठी कादंबरी	डॉ.राजेंद्र थोरात	67-79
13	महाराष्ट्रातील भटके - विमुक्त आणि त्यांचे साहित्य लेखन	प्रा.डॉ.सोपान माणिकराव सुरवसे	80-84
14	संत तुकाराम गाथेच्या समीक्षेचे विविध दृष्टिकोन	सदानंद आग्रे	85-88
15	व्यक्तिचित्रण' या साहित्यप्रकाराचे स्वरुप	प्रा.बाजीराव कृष्णाजी पाटील	89-94
16	स्त्री - पुरुष समानतेच्या मूल्याबाबत सद्यस्थितीचा अभ्यास	डॉ.एकनाथ द. वाजगे	95-100
17	नारी के विविध रुप - लेखिका मंजूल भगत की दृष्टी से	प्रा. डॉ.शोभा यशवंते	101-105
18	मराठी कीर्तन व कीर्तनाचे प्रकार	डॉ.विनोद गायकवाड गिरीश जोशी	106-109
19	हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श	प्रा.विजयानंद गंगावणे	110-113

हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श

प्रा.विजयानंद गंगावणे

लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर

हिन्दी साहित्य में पिछले कुछ वर्षों में नारी विमर्श की चर्चा होती रही है। और यह उपन्यासों और कहानियों के सन्दर्भ में अधिक देखी और दिखाई जा रही है। विमर्श कोई भी हो बुरा नहीं होता, क्योंकि साहित्य का एक मात्र उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि अनेक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा, चिन्तन, मनन और विमर्श भी है। अनेक ऐसी लेखिकाएं है जिनकी रचनाओं में नारी जीवन के अनेक अनुछए रूपों, पक्षों, समस्याओं को उजागर किया गया है।

धर्म, समाज और साहित्य में नारी विभिन्न रूपों में परिभाषित की गई है। कभी वह पुरुषों की अनुगामिनी और पवित्रता की मूर्ति बताई गई, तो कभी अबला और त्याग की मूर्ति और कभी आवेगमयी और चंचला जो तर्क के बंधन को नहीं मानती। मध्यकालीन निर्गुण, सगुण, भक्ति-साहित्य में कबीर, तुलसी आदि ने नारी के सबंध में जो निंदापरक उदगार प्रकट किए है, उसे आज की सजग नारी कभी मान्य नहीं करेगी।

"नारी की झाई पड़त अंधा होत भुजंग।

कबिरा तिन की क्या गती जो नित नारी संग।"

जैसी काव्य पंक्तियाँ पितृसत्तात्मक धारणाओं का ही प्रकटीकरण है। तुलसीदास ताड़ना के अधिकारियों में ढोल, गँवार, शुद्र के साथ नारी को भी समाविष्ट कर देते है। उनके अनुसार स्वतंत्रता नारियों को बिगाड़ती है। जागरुक नारी की समझ में आ जाता है कि, "किस प्रकार कबीर, तुलसी जैसे मानवीय संवेदनशील कवि भी पितृसत्तात्मक सर्चस्व से मुक्त नहीं है। उनमें स्त्री के प्रति किसी न किसी रूप में असंवेदनशीलता और तिरस्कार पूर्ण दृष्टिकोण मौजूद है।"

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्र.
1	Role of Communication in Personality Development	Munjaji Kishanrao Rakhonde	1-5
2	Use Of Linear Algebra In Cryptography	Mayur Satish Patil	6-10
3	Effective Study of the Great Depression on the Indian Economy	Dr. Valmik Dagadu Parhar	11-15
4	Autonomy of students Teachers and educational Institution	Asst. Prof.Dr. Meenal Vanvat	16-22
5	Screening of Aerobic Cellulolytic Bacteria from the gut of Termite for Cellulase Production	Surekha Digambar Bharambe	23-29
6	A Critical Analysis Of Medical Waste Management, Its Impact On Human Being And Environment.	Prof.Ratnakar Sudamrao Bansod	30-35
7	"A Critical Analysis Of Uncitral (United Nation Commission On International Trade Law) Model Law On Cross Border Insolvency (Insolvency & Bankruptcy Code 2016) And Its Enforciability In India"	Adv. Renuka Manikrao Talokar	36-42
8	नवासा भिलनिचा एल्गार कथासंग्रहाची भाषाशैली	प्रा. डॉ. विजय पाटील	43-45
9	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही	प्रा.संदीप कोरडे	46-50
10	भारतातील ऑनलाइन शॉपिंगची गरज आणि भविष्य	डॉ. संतोष धामने	51-56
11	प्रवासवर्णनातून व्यक्त होणारी स्त्रियांची मानसिकता	मनिषा दादाभाऊ औटी	57-66
12	रुपेरी पडद्यावरील मराठी कादंबरी	डॉ.राजेंद्र थोरात	67-79
13	महाराष्ट्रातील भटके - विमुक्त आणि त्यांचे साहित्य लेखन	प्रा.डॉ.सोपान माणिकराव सुरवसे	80-84
14	संत तुकाराम गाथेच्या समीक्षेचे विविध दृष्टिकोन	सदानंद आग्रे	85-88
15	व्यक्तिचित्रण' या साहित्यप्रकाराचे स्वरुप	प्रा.बाजीराव कृष्णाजी पाटील	89-94
16	स्त्री - पुरुष समानतेच्या मूल्याबाबत सद्यस्थितीचा अभ्यास	डॉ.एकनाथ द. वाजगे	95-100
17	नारी के विविध रुप - लेखिका मंजूल भगत की दृष्टी से	प्रा.डॉ.शोभा यशवंते	101-105
18	मराठी कीर्तन व कीर्तनाचे प्रकार	डॉ.विनोद गायकवाड गिरीश जोशी	106-109
19	हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श	प्रा.विजयानंद गंगावणे	110-113

हिन्दी की आत्मकथाओं में नारी विमर्श

प्रा.विजयानंद गंगावणे

लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर

हिन्दी साहित्य में पिछले कुछ वर्षों में नारी विमर्श की चर्चा होती रही है। और यह उपन्यासों और कहानियों के सन्दर्भ में अधिक देखी और दिखाई जा रही है। विमर्श कोई भी हो बुरा नहीं होता, क्योंकि साहित्य का एक मात्र उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि अनेक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा, चिन्तन, मनन और विमर्श भी है। अनेक ऐसी लेखिकाएं है जिनकी रचनाओं में नारी जीवन के अनेक अनुछए रूपों, पक्षों, समस्याओं को उजागर किया गया है।

धर्म, समाज और साहित्य में नारी विभिन्न रूपों में परिभाषित की गई है। कभी वह पुरुषों की अनुगामिनी और पवित्रता की मूर्ति बताई गई, तो कभी अबला और त्याग की मूर्ति और कभी आवेगमयी और चंचला जो तर्क के बंधन को नहीं मानती। मध्यकालीन निर्गुण, सगुण, भक्ति-साहित्य में कबीर, तुलसी आदि ने नारी के सबंध में जो निंदापरक उदगार प्रकट किए है, उसे आज की सजग नारी कभी मान्य नहीं करेगी।

"नारी की झाई पड़त अंधा होत भुजंग।

कबिरा तिन की क्या गती जो नित नारी संग।"

जैसी काव्य पंक्तियाँ पितृसत्तात्मक धारणाओं का ही प्रकटीकरण है। तुलसीदास ताड़ना के अधिकारियों में ढोल, गँवार, शुद्र के साथ नारी को भी समाविष्ट कर देते है। उनके अनुसार स्वतंत्रता नारियों को बिगाड़ती है। जागरुक नारी की समझ में आ जाता है कि, "किस प्रकार कबीर, तुलसी जैसे मानवीय संवेदनशील कवि भी पितृसत्तात्मक सर्चस्व से मुक्त नहीं है। उनमें स्त्री के प्रति किसी न किसी रूप में असंवेदनशीलता और तिरस्कार पूर्ण दृष्टिकोण मौजूद है।"

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Prof. Dr. Sadashiv H. Sarkate

● Mailing Address ●
Prof. Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

ऑनलाईन कक्षाओं का छात्रों पर प्रभाव

प्रा.विजयानंद गंगावणे
लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर
जि.जालना

सार : ऑनलाईन कक्षाएँ दुनियाभर में हाल ही के दिनों में अभूतपूर्व भूमिका निभा रही है। ऑनलाईन कक्षाएँ पारंपरिक कक्षाओं की तुलना में अधिक लचीली होती है। इनके दौर ने छात्र अधिक आरामदायक होते है। साथ ही ऑनलाईन कक्षाओं में बच्चों को ध्यान केंद्रीत कर एक जगह पर बैठना पड़ता है। बच्चों का समग्र विकास ऑलनाईन कैसे बने पडाओगी वे लेवर पर समग्रता की दृष्टि को लागू कर मिश्रित प्रणाली को विकसित किया जा सकता है।

शब्द संकेत : ऑनलाईन कक्षाएँ, ऑनलाईन कक्षाएँ और छात्र, ऑलनाईन कक्षा के फायदे, ऑनलाईन कक्षा के नुकसान

परिचय :

ऑलनाईन शिक्षा ने कोविड-19 महामारी में एक अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। इसने दुनिया के कार्यो और शिक्षार्थियों के सीखने के तरिके को बदल दिया है। करोनो संक्रमण के दौरान दुनियाभर के स्कूलों में शिक्षा सत्र ऑनलाईन रहा। ऑनलाईन माध्यम से पढ़ाई लंबे वक्त तक चली तो बच्चों की शिक्षा ही नहीं उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और सेहत पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ा है। ऑलनाईल शिक्षा कि देश में कोई तैयारी नहीं थी, यहाँ तक कि हमारे पास बुनियादी ढाँचा भी नहीं था लेकिन समय के साथ समस्याएँ हल होती गई और हम उच्च स्तर में आ गए। ऑनलाईन कक्षाओं के कई फायदे और नुकसान है।

ऑनलाईन कक्षा के फायदे :

ऑनलाईन कक्षाएँ दूरी की बाधा को दूर करती है। कोई भी छात्र जिसके पास इंटरनेट तक पहुँच है, वह व्याख्यान में भाग ले सकता है। ऑनलाईन कक्षाएँ पारंपरिक कक्षाओं की

तुलना में उन्हें अधिक लचीलापन प्रदान करती है। यह उन व्यस्त लोगों के लिए बहुत अच्छा लगता है जो सीखना चाहते हैं। लेकिन उन्हें पर्याप्त समय नहीं मिलता है। ऑनलाईन कक्षाओं के दौरान छात्र अधिक आरामदायक होते है। वे निर्णय की भावना के बिना अधिक प्रश्न पूछते हैं। बच्चों या उनके माता-पिता तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए शिक्षकों ने वे अलग-अलग कक्षाओं के वॉटस ऐप ग्रुप बनाये हुए हैं। माता-पिता खुश है कि स्कूल बंद होने पर भी बच्चों की पढ़ाई हो रही है। ऑनलाईन कक्षाओं में बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी जुड़ गए हैं। विदेश तथा विभिन्न प्रदेशों में डिजिटल लाईब्रेरिज शुरु की गई।

ऑनलाईन कक्षा के नुकसान :

ऑनलाईन कक्षा जहाँ बच्चों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है वहीं इससे कुछ नुकसान भी नजर आ रहे हैं। बच्चों के माता-पिता को ये भी चिंता है कि बच्चों को चार से पांच घंटे मोबाईल लेकर बैठना पड़ता हैं। ऑनलाईन कक्षाओं ने छात्रों की पढ़ाई नहीं बल्कि मन पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला है। कंप्युटर और मोबाईल स्क्रीन पर भी पढ़ने के कारण छात्रों का मन ऑफलाईन कक्षाओं से भटक गया है। अक्सर छात्रों को नियम तोड़ने और यहाँ तक कि शिक्षकों को बेवकूफ बनाने के रुप में देखा जा सकता है। अक्सर, छात्रों को नियम तोड़ने और यहाँ तक कि शिक्षकों को बेवकूफ बनाने के रुप देखा जा सकता है। लर्निंग के तीन तरीके होते है। पहला शिक्षक से मिली लर्निंग, दूसरा पियर लर्निंग जो अपने सहपाटियों से सीखते है, और तीसरा सेल्फ लर्निंग जिसमें छात्र नेट पर सर्फिंग करते हैं। लाइब्रेरी जाते है, लैब जाते है। शिक्षक लर्निंग तो ऑनलाईन को गई है लेकिन पियर लर्निंग और सेल्फ लर्निंग जीरो हो गई। कोवीड-19 के चलने लगे लॉकडाऊन के बाद अधिकांश घरों में बालिकाएँ सबसे ज्यादा प्रभावित हुई हैं। उन्होंने ना सिर्फ घरेलू काम किए बल्कि अपने भाईयों की खातीर अपनी पढ़ाई से भी समझौता किया तकनीकी अभी इतनी स्मार्ट नहीं हुई है कि एक साथ सभी बच्चें कनेक्ट हो सके। यह एक तरह की शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना भी है। ऑलनाईन कक्षाओं में बच्चों को ध्यान केंद्रित कर एक जगह पर बैटना पड़ता है। वही ऑफनाईन कक्षा में बच्चों के पास मानसिक व शारीरिक स्वतंत्रता होती है। प्रयोगात्मक पढ़ाई के लिए ऑनलाईन कक्षाएँ सफल साबित नहीं हो रही है। ऑनलाईन क्लास में एक जगह पर बैठे-बैठे

अकसर हाथ में या ग
दिक्कत बीच क्लास
में सभी बच्चों जब न
है।

सुझाव :

बच्चों के व्यव
छोटे उम्र के बच्चों
अंतराल रखो, शिक्षा
डालना चाहिए। ऑन
चाहिए। अतः शिक्षकों
व छात्र दोनों तैयार ह
नहीं है। अतः जिन ह
बच्चों के स्वास्थ्य संबं

बच्चों का सम
लागू किया जा सकता

निष्कर्ष :

जहाँ चुनौतियां
मनुष्य की जीवन की
महामारी से पूर्व हम
लेकिन आज एक स
माध्यम से हम संप्रेष
कोरोना महामारी की
शिक्षा नीति के जो पा
तो उसके निवारण कि

लिए बहुत अच्छा
ऑनलाईन कक्षाओं
अधिक प्रश्न पूछते
न वे अलग-अलग
होने पर भी बच्चों
माता-पिता भी जुड़

है वहीं इससे कुछ
बच्चों को चार से
की पढ़ाई नहीं बल्कि
भी पढ़ने के कारण
यम तोड़ने और यहाँ
र, छात्रों को नियम
कता है। लर्निंग के
ा अपने सहपाठियों
हैं। लाइब्रेरी जाते है.
र्निंग और सेल्फ लर्निंग
ंश घरों में बालिकाएँ
ने भाईयों की खातीर
कि एक साथ सभी
भी है। ऑनलाईन
वही ऑफनाईन कक्षा
त्मक पढ़ाई के लिए
एक जगह पर बैठे-बैठे

अक्सर हाथ में या गर्दन में दर्द होता है। कई बार आँखों से आंसू भी आते हैं। सबसे जादा दिक्कत बीच क्लास में नेटवर्क प्रॉब्लेम आने से कनेक्टिविटी की होती है। ऑनलाईन क्लास में सभी बच्चों जब तक एक साथ क्वेश्चन पुट अप करते है तो समझने में भी दिक्कत आती है।

सुझाव :

बच्चों के व्यवहार और मानसिक स्थिति में होनेवाले बदलाव पर नजर रखे। स्कूल के छोटे उम्र के बच्चों पर पढ़ाई का बोझ कम करना चाहिए। शिक्षक दो कक्षाओं के बीच अंतराल रखो, शिक्षा प्रणाली की नई व्यवस्था पर बच्चे ऑनलाईन कक्षाओं के लिए खुद को डालना चाहिए। ऑनलाईन कक्षाओ से शिक्षकों को भी पढ़ाई कराने का नया तरीका सीखना चाहिए। अतः शिक्षकों को ऑनलाईन ट्रेनिंग की जरूरत है। पढ़ाने और पढ़ने से पहले शिक्षक व छात्र दोनों तैयार होकर ऑनलाईन हो। ज्यादात्तर ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के पास यह सुविधा नहीं है। अतः जिन छात्रों के पास ऑनलाईन पढ़ने के साधन नहीं है, उन्हें सुविधा दी जाएँ। बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

बच्चों का समग्र विकास ऑलनाईन कैसे बने पेडागोजी लेवल पर समग्रता की दृष्टि को लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

जहाँ चुनौतियां होती है वहाँ अक्सर होता है और चुनौतियों को अवसर में बदलना ही मनुष्य की जीवन की सार्थकता है। ऑनलाईन एज्युकेशन करोना महामारी की देन है। कोरोना महामागरी से पूर्व हम गौरवान्ति महसूस कर रहे थे कि हम इतना ऑनलाईन कार्य करने लगेंगे लेकिन आज एक सहज प्रक्रिया धीरे-धीरे देश में प्रारंभ हो गई। आज हम सभी ऑनलाईन माध्यम से कम संप्रेषण कर पा रहे है। आपस में ज्ञान का आदान-प्रदान कर रहे है। जब कोरोना महामारी की विदाई के बाद भी हमें बहुत सी बातों को ध्यान में रखना होगा। भारतीय शिक्षा नीति के जो परिप्रेक्ष्यों का उद्देश्य भारत को विश्वगुरु बनाना है। जब समस्याएँ आती है तो उसके निवारण लिए प्रयत्न होना चाहिए। हम भारतीयों में क्षमता है हम पर जितने प्रहार

होते जाएँगे हमारी स्वच्छता निर्मलता उज्ज्वलता उतनी ही बढ़ती और निखरती जाएगी। अभी भी ऑनलाईन शिक्षा को बहुत से फैकल्टी कम तर मानते है। पढ़ाई को पूरी तरह ऑनलाईन से स्थानातरित कर पाना संभव नहीं है। खास तौर से अगर किसी को दोनों में से एक को चुनने का विकल्प दिया जाए। हमें एक साथ पूरी शिक्षा ऑफलाईन ना करके मिक्सड शिक्षण प्रक्रिया का इस्तेमाल करना चाहिए। बडे आनंद की बात है कि नई शिक्षा नीति में भी ऑनलाईन शिक्षा को स्वीकार किया गया है, शिक्षा नीति में समग्रता की दृष्टि की बात कही गई है तथा मिक्सड पेडागोजी शब्द इस्तेमाल किया गया। इसमें बहुत सी समस्याओं का समाधान और बहुत सी बातों का समावेश कर सकते है। अतः ऑनलाईन शिक्षक प्रत्यक्ष शिक्षा का विकल्प नहीं हो सकताा लेकिन हम मिश्रित प्रणाली को विकसित कर सकते हैं।

संदर्भ-सूची

1. अग्रवाल, श्रेखा, आप और आपका बालक, पृ. 17
2. पाठक पी. डी.. शिक्षण के सिद्धांत एवं विधियाँ, पृ. 14
3. पाठक पी.डी. शिक्षण एवं अधिगम के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, पृ. 8
4. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, पृ. 13
5. त्यागी गुरसरनदास, आधुनिक भारत एवं शिक्षा, पृ. 23
6. मलैया के. सी.. जनसंख्या शिक्षा एवं पर्यावरण शिक्षा, पृ. 37
7. पारीख बाबालाल, सगर्भावस्था और आपका बालक, पृ. 97

◆◆◆

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur

ISSN 2319 - 8508

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GALAXY LINK

Volume - XI Issue - I November - April - 2022-23

English / Marathi / Hindi Part - I

Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
Journal No. 47023

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2020 - 6.495
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	स्त्रीवादी लेखन तथा स्त्री मुक्ति की परम्परा **डॉ. मैराज अन्वर तडवी**	१-४
२	'गुलाम मंडी': आधुनिकता की चकाचौंध में मानवी तस्करों की शिकार लड़कियाँ **डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर**	५-८
३	एन.सी.टी.ई. के मानकों के संदर्भ में उत्तर प्रदेश में शिक्षक-प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण **डॉ. चंचल कुमार द्विवेदी**	९-१२
४	उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर एवं ऐड-ऑन कोर्स की स्थिति का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन **अमर बहादुर यादव** **डॉ. आराधना पाण्डेय**	१३-१६
५	भीष्म साहनीकृत 'कडियाँ' एक अध्ययन **डॉ. विजयानंद गंगावणे**	१७-१९

५. भीष्म साहनीकृत 'कडियाँ' एक अध्ययन

डॉ. विजयानंद गंगावणे
लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, परतूर, जि. जालना.

प्रस्तावना

भीष्म साहनी स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के वरिष्ठ और बहुचर्चित साहित्यकार है। वे बहुविध प्रतिभा के धनी है। उन्होंने अपनी लेखन यात्रा का आरंभ यथार्थ के उन सोपानों पर खड़े हो कर की है, जहाँ उनकी चेतना समष्टिगत अनुभूति से अपना नाता जोड़ती दिखायी देती है। कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि से लेकर बाल साहित्य तक जिस विधा को भी उन्होंने छुआ है, उसमें वे एक सच्चे साहित्यकार की भूमिका लेकर उपस्थित हुए है।

भीष्म साहनी के साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण अनुवंश तत्त्वों और परिवेशगत विशेषताओं के सम्यक समन्वय से हुआ। पिताजी के साहित्यिक संस्कार और माता की लोकाभिरुचि जहाँ उन्हें विरासत में मिली, वही बड़े भाई बलराज साहनी और बुवा को सत्यवती मल्लिक से साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली। इसके साथ ही धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के गहन निष्ठा और राष्ट्रप्रेम ने भी उनकी रचनाशीलता को गहरे सरोकार से मंडित किया। विभिन्न भाषाओं के ज्ञान और व्यापक अध्ययन से उनके साहित्य सृजन को बहुआयामी बल दिया।

भीष्म साहनी ने स्वातंत्र्य आंदोलन को समीप से देखा। अंग्रेजो की कुटिलता और दमन नीती से उनका परिचय था। देश विभाजन के समय की ह्रदय विदारक घटनाओं के वे चश्मदीद गवाह रहे हैं। और संवेदनशील रचनाकार होने के नाते उसे बड़ी गहराई से अनुभव भी करते रहे है। यह गहन अनुभूतियाँ बार-बार उनके साहित्य का उपजीव्य बनकर अभिव्यक्त होती रही है। वे जहाँ प्रेमचंद सुदर्शन, यशपाल, अज्ञेय जैसे भारतीय रचनाकारों से प्रभावित हुए, वहीं पर कैथरीन मेन्सफील्ड, फ्रान्सीसी लेखक मोपासा, रूसी लेखक गोर्की, चेखब और ताल्स्तोय जैसे विदेशी रचनाकारों का भी उनपर प्रभाव पड़ा।

भीष्मसाहनी सामाजिक चेतना संपन्न उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में प्रकाशन के क्रमानुसार 'कडियाँ' दूसरे क्रम का उपन्यास है। यह सामाजिक और पारिवारिक उपन्यास है। इसमें पति, पत्नी और प्रेमिका के अंतः संबंधो का उहापोह किया गया है। इसकी कथावस्तु मानवीय संबंधो के टुटते- जुड़ते रिश्तों पर आधारित है।

सारांश : 'कड़ियाँ' उपन्यास से प्रेम-तत्त्व की सृष्टि हुई है। 'कड़ियाँ' में प्रेम अपने विभिन्न रुपों में प्रकट हुआ है। पति-पत्नी और प्रेमिका के बीच त्रिकोणीय प्रेम का संचार हुआ है। कडियाँ उपन्यास का महेंद्र एक तरफ अपनी पत्नी प्रमिला को भी प्यार करना चाहता है। और प्रेमिका सुषमा को भी। परंतु एक पत्नी के होते हुए हमारे सामाजिक और पारंपरिक मूल्य इस तरह के प्रेम को प्रश्रय नहीं देते। महेंद्र का प्यार विपरीत दिशा में अग्रसित होता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ना तो वह प्रमिला का

Principal
Lal Bahadur Shastri
Sr. College, Partur